ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-8* September- 2021
Innovation The Research Concept

मुरैना जिले की आयु संरचना का भौगोलिक अध्ययन

Geographical Study of Age Structure of Morena District

Paper Submission: 10/09/2021, Date of Acceptance: 23/09/2021, Date of Publication: 24/09/2021

सत्यवती राठौर
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
अम्बाह स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय,
अम्बाह, मुरैना, म.प्र., भारत

शिवराज सिंह तोमर
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
भूगोल विभाग,
पी.जी. कॉलेज, अम्बाह,
जिला मुरैना म.प्र., भारत

सारांश

आयु संरचना जनसंख्या के क्रमिक विकास की एतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करती है, इसके साथ ही क्षेत्र के मानव जीवन की दिशा एवं दशा को अभिव्यक्त करती है। आयु वर्ग के अनुसार ही मानव की आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी परिवर्तित होती है। आयु वर्ग की संरचना पोषक एवं आश्रित जनसंख्या की भिन्नता को स्पष्ट करती है। आयु वर्ग के आधार पर ही मानव की आवश्यकताएँ, कार्यक्षमता, दक्षता, दृष्टिकोण, विचार सुनिश्चित होते है। अतः आयु वर्ग उस मानव समूह के क्रियाकलापों से घनिष्ठतः अंतः संबंध रखता है।

मुरैना जिला भारत के हद्वय प्रदेश मध्यप्रदेश राज्य के उत्तर मंे मुकुट के तिलक की भाँति दृष्टिगोचर होता है। जिले का ज्यॉमितीय विस्तार 250 55‘ से 260 52‘ उत्तरी अक्षांश एवं 770 10‘ से 78‘ 42‘ पूर्वी देशांत्तर के मध्य पाया जाता है। जिले का विस्तार 5016.86 वर्ग कि.मी. भूभाग पर है।

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य मुरैना जिले में आयु संरचना के अध्ययन से कार्यशील एवं अकार्यशील जनसंख्या को ज्ञात करना व विकासखण्ड वार आयु वर्गों के अन्तर को ज्ञात करना है।
प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में आयु संरचना विविध आयु वर्गों में अत्यधिक असमानता लिये हुये है, जो इसके पिछड़े आर्थिक विकास का द्योतक है। जिले के दक्षिण पश्चिमी भाग पहाड़गढ़ विकासखण्ड में शिशु एवं बाल जनसंख्या का प्रतिशत अधिक (इसकी कुल जनसंख्या का 42.8ः) है, जो यहाँ अधिक जन्मदर, शिक्षा की कमी व परम्पराओं की ओर संकेत करता है। इसके विपरीत जिले के पूर्वी भाग अम्बाह विकासखण्ड में शिशु व बाल जनसंख्या का प्रतिशत निम्नत्तम (इसकी कुल जनसंख्या का 38ः) दर्ज किया गया है, जो यहाँ शिक्षा का विस्तार, जागरूकता व घटती जन्मदर की ओर संकेत करता है। अध्ययन क्षेत्र में किशोर जनसंख्या का अधिक प्रतिशत मुरैना विकासखण्ड (इसकी कुल जनसंख्या का 19.6ः) एवं निम्नत्तम प्रतिशत पहाड़गढ़ एवं जौरा विकासखण्डों में (इसकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 16.8ः एवं 16.9ः) अंकित किया गया है। जिले में युवा जनसंख्या का अधिक प्रतिशत जौरा एवं अम्बाह विकासखण्डों में (इसकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 22.2ः एवं 22.3ः) एवं निम्नत्तम प्रतिशत मुरैना एवं सबलगढ़ विकासखण्डों में (इसकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 20.2ः एवं 20.4ः) दर्ज किया गया है, जो इस क्षेत्र में रोजगार की परिस्थितियों एवं रोजगार हेतु युवाओं का पलायन है। अध्ययन क्षेत्र मंे प्रौढ़ जनसंख्या का अधिक प्रतिशत अम्बाह एवं पोरसा विकासखण्डों में (इसकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 14.9ः एवं 15.2ः) दर्ज किया गया है एवं निम्नत्तम प्रतिशत, कैलारस एवं जौरा विकासखण्डों में (इसकी कुल जनसंख्या का 13ः एवं 13.4ः) अंकित किया गया है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में शिशु एवं बाल जनसंख्या का प्रतिशत 40.2 है, जो उच्च जन्म की ओर संकेत करती है और 60 वर्ष से अधिक उम्र बालों की जनसंख्या बहुत कम (6.5ः) है। अध्ययन क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या की तुलना में अकार्यशील जनसंख्या भी अधिक अंकित की गई है।

The age structure explains the historical background of the gradual development of the population, as well as the direction and condition of human life in the area. According to the age group, the economic and cultural activities of human beings also change. The age group structure explains the difference between the feeder and the dependent population. On the basis of age group, human needs, functionality, efficiency, attitude, ideas are determined. Thus, age group is closely related to the activities of that human group.

Morena district is visible like the tilak of the crown in the north of the state of Madhya Pradesh, the heart of India. The geometrical extent of the district is found between 250 55' to 260 52' north latitude and 770 10' to 78' 42' east longitude. The extent of the district is 5016.86 sq. km. is on the terrain.

The main objective of the present research paper is to find out the working and non-working population and to find out the difference of age groups development block wise by the study of age structure in Morena district.

Primary and secondary data have been used in the present research paper.

The age structure of the study area is highly disparate among different age groups, which is indicative of its backward economic development. The percentage of infant and child population is high (42.8 percent of its total population) in Pahargarh block, south western part of the district, which indicates high birth rate, lack of education

and traditions. On the contrary, in the Ambah block in the eastern part of the district, the lowest percentage of infant and child population (38% of its total population) has been recorded, which indicates the spread of education, awareness and declining birth rate. The highest percentage of adolescent population in the study area has been recorded in Morena development block (19.6 percent of its total population) and lowest percentage in Pahargarh and Jaura development blocks (16.8 percent and 16.9 percent of its total population respectively). The highest percentage of youth population in the district is recorded in Jaura and Ambah blocks (22.2: and 22.3 percent of its total population respectively) and the lowest percentage in Morena and Sabalgarh blocks (20.2 percent and 20.4% of its total population respectively), which There is migration of youth for employment and employment in this area. The highest percentage of adult population in the study area has been recorded in Ambah and Porsa blocks (14.9: and 15.2 percent of its total population respectively) and the lowest percentage is recorded in Kailaras and Jaura blocks (13% and 13.4 percent of its total population). has gone.

It is clear from the above description that the percentage of infant and child population in the study area is 40.2, which indicates high birth weight and the child population above 60 years of age is very less (6.5%). The non-working population has also been marked higher than the working population in the study area.

मुख्य शब्दः जनसंख्या, जनांकिकी, संरचना, निदर्श, विविधता, नियोजन
Keywords: Population, Demography, Structure, Sampling, Diversity, Planning.

प्रस्तावना

आयु संरचना जनसंख्या के क्रमिक विकास की एतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करती है इसके साथ ही क्षेत्र के मानव जीवन की दिशा एवं दशा को अभिव्यक्त करती है। आयु वर्ग के अनुसार ही मानव की आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी परिवर्तित होती है। आयु वर्ग की संरचना पोषक एवं आश्रित जनसंख्या की भिन्नता को स्पष्ट करती है। आयु वर्ग के अनुरूप ही मानव का शारीरिक विकास, ढलाव एवं शिथिलता सुनिश्चित होती है। आयु वर्ग के आधार पर मानव की आवश्यकताएँ, कार्यक्षमता, दक्षता, दृष्टिकोण, विचार सुनिश्चित होते है। अतः आयु वर्ग उस मानव समूह के क्रियाकलापों से घनिष्ठतः अंतः संबन्ध रखता हैं।

आयु संरचना जनांकिकीय के विविध घटकों जन्मदर, मृत्युदर, प्रवास से भी प्रभावित होती है साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ भी आयु संरचना को प्रभावित करती है। फलतः जनांकिकीय विशेषताएँ क्षेत्रीय भौगोलिक परिस्थितियांे के अनुरूप भिन्न-भिन्न पायी जाती है। प्रत्येक स्थान की भौतिक व सांस्कृतिक दशाएँ किसी अन्य स्थान से न्यूनाधिक विषम अवश्य होती है। तद्रूरूप वहाँ मानव समूह की आयु संरचना भी विविधता युक्त होती है।(1) अतः यहाँ जनांकिकीय विकास की दृष्टि से जनसख्या संरचना के आयु वर्ग का स्थानिक अध्ययन उस क्षेत्र विशेष के सन्तुलित विकास हेतु आवश्यक है।

अध्यन का क्षेत्र

मुरैना जिला भारत के हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश राज्य के उत्तर में मुकुट के तिलक की भाँति दृष्टिगोचर होता है। क्षेत्रीय किवदन्तियों के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण ने यहॉ गौचारण के समय ‘‘मुर‘‘ राक्षस का हनन किया था, इस कारण इसका नाम ‘‘मुरहना‘‘ पड़ा जो कालान्तर में मुरैना के रूप में परिणत हो गया है। मुरैना जिले का ज्यॉमितीय विस्तार 250 55‘ से 260 52‘ उत्तरी अक्षांस एवं 770 10‘ से 780 42‘ पूर्वी देशान्तर के मध्य पाया जाता है। इसके अन्तर्गत 6 तहसीलें (पोरसा, अम्बाह, मुरैना जौरा, कैलारस, एवं सबलगढ) 7 विकासखण्ड (पोरसा, अम्बाह, मुरैना, जौरा, पहाड़गढ़, कैलारस एवं सबलगढ) व 8 नगर (पोरसा, अम्बाह, मुरैना, बानमौर, जौरा,कैलारस, सबलगढ़ व झुण्डपुरा) पाये जाते हैं। जिले की उत्तरी सीमा चम्बल नदी एवं आगरा

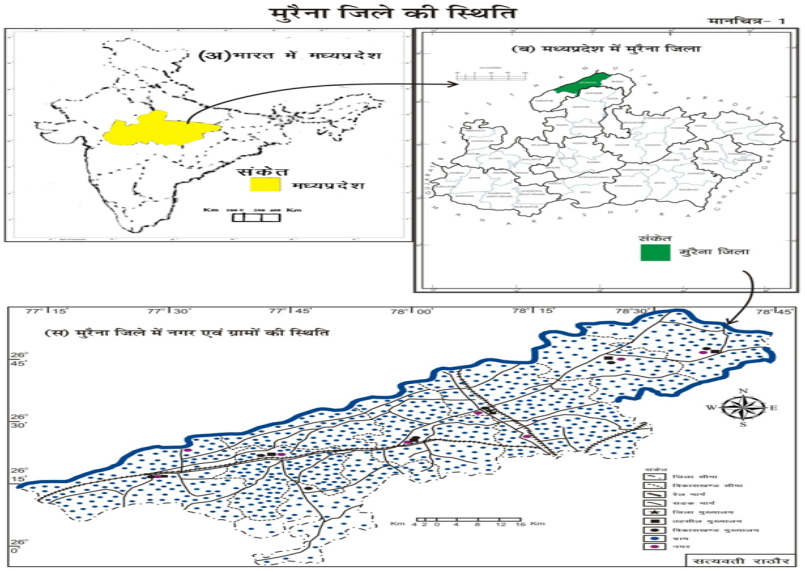

दक्षिणी पूर्वी सीमा आसन व कुँआरी नदियाँ निर्धारित करती है। चम्बल नदी इसको राजस्थान व उत्तर प्रदेश प्रान्तों से अलग करती है। जिले के उत्तर में करौली, धौलपुर, (राजस्थान) एवं आगरा (उत्तरप्रदेश), दक्षिण में ग्वालियर, पूर्व में भिण्ड, पश्चिम में श्योपुर एवं दक्षिण पश्चिम में श्योपुर व शिवपुरी जिलों की सीमाएँ लगती है।

जिले का विस्तार 5016.86 वर्ग कि.मी. (ग्रामीण पत्रक) भू भाग पर पाया जाता है। इसकी पूर्व पश्चिम अधिकतम लम्बाई 95 कि.मी. एवं न्यूनत्तम लम्बाई 3 कि.मी. पायी जाती है। जिले की उत्तर दक्षिण अधिकत्तम चौड़ाई 75 कि.मी. एवं न्यूनत्तम चौड़ाई 7 कि.मी. पायी जाती है। वर्ष 2011 की जनगणनानुसार जिले की जनसंख्या 1965970 व्यक्ति पायी जाती है। यहाँ जिले का जनघनत्व 392 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. एवं लिंगानुपात 840 महिलाएँ प्रति हजार पुरूष दर्ज किया गया है। यहाँ जनसंख्या दशाब्दिक वृद्धि दर 23.4ः पायी जाती है। जिसमें ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या दशाब्दिक वृद्धि दर क्रमशः 19.7 एवं 37.04ः पायी जाती है। जिले में जनसंख्या की दशाब्दिक प्रचलित वृद्धि दर के आधार पर वर्ष 2021 में अध्ययन क्षेत्र की संभावित जनसंख्या 2426007 होगी।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्न लिखित है।

1. मुरैना जिले में आयु वर्ग के आधार पर कार्यशील एवं अकार्यशील जनसंख्या को ज्ञात करना।
2. विकासखण्ड वार आयु वर्गों के अन्तर को ज्ञात करना।

प्रस्तुत शोध पत्र मूलतः दो संकल्पनाओं पर आधारित है जो अध्ययन संबंधी उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होगे।

1. आयु संरचना जनांकिकीय घटकों से सह-संबंध रखती है।
2. सामाजिक आर्थिक परिस्थितियाँ आयु सरंचना से अंतः संबंधित है।

विधि तंत्र

शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको का प्रयोग किया गया है। शोधार्थी द्वारा प्राथमिक आंकड़े संकलित करने के लिए अध्ययन से सम्बन्धित तथ्यों का अवलोकन, परीक्षण एवं सर्वेक्षण किया गया। अध्ययन क्षेत्र की इकाईयों व ग्रामों की वास्तविक स्थितियों, प्रवृत्तियों को स्पष्ट करने के लिए जिले के 7 विकासखण्डों में से प्रतिदर्शी अध्ययन हेतु ग्रामों का चयन स्तरित आनुपातिक निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में पोरसा, अम्बाह विकासखण्डों से 4-4, कैलारस विकासखण्ड से 5, जौरा, पहाड़गढ़, सबलगढ़ विकासखण्ड से 6-6 एवं मुरैना विकासखण्ड से 9 ग्रामों का चयन इनके कुल ग्रामों का 5ः के आधार पर किया गया है। इसके साथ ही इन ग्रामों के 20ः परिवारों का चयन जाति वर्ग, आय वर्ग और धर्म विशेष को ध्यान में रखकर किया गया है इस प्रविधि में प्रत्येक ग्राम एवं परिवार को अलग-अलग विकासखण्ड एवं ग्रामवार क्रमांक देकर फिशर एवं एट्स स्तरित संख्या द्वारा निदर्शन हेतु चयनित किया गया है। इसी प्रकार जिले के आठ नगरों में से पोरसा, अम्बाह, बानमौर, जौरा, कैलारस, सबलगढ़, झुण्डपुरा नगरों में से 1-1 एवं मुरैना नगर के 2 वार्डों का चयन उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुये किया गया है, इसी आधार पर शोधार्थी द्वारा सूक्ष्म स्तरीय आँकड़े संकलित व संग्रहित करने के लिए प्रश्नावली साक्षात्कार अनुसूचित की सहायता से ग्राम सहायक, सरपंच, पटवारी, शिक्षक,जनगणना कार्यालय, आंगनवाड़ी एवं समाज सवियों के सहयोग से वांछित आँकडे एवं जानकारी संकलित कर विकासखण्ड जिला, नगर के आँकडो का आंकलन वर्ष 2017 की संभावित जनांकिकीय को प्रस्तुत किया गया है। विषय से सम्बन्धित

द्वितीयक समंक एवं जानकारी राजपत्रों, जिला जनगणना सेन्सस, जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, जनगणना प्रतिवेदनों, शासकीय अर्द्धशासकीय एवं निजी संस्थाओं के प्रतिवेदनों, पुस्तकों, पत्रिकाओं, प्रतिवेदनों, संचार माध्यम, जनसंख्या पोर्टल एवं इन्टरनेट के माध्यम से प्राप्त किये गये हैं। जिले के विविध स्तरीय संकलित समंको को विषयवस्तु एवं तथ्यों के अनुरूप सारणीबद्ध कर विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही समंकों के विश्लेषण में विविध सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से मानचित्र एवं रेखाचित्रों का प्रयोग कर अध्ययन को स्पष्ट सरल एवं बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है। जिसके आधार पर अध्ययन के अन्तिम निष्कर्षों तक पहुँचने का प्रयास किया गया है।

मुरैना जिले का भौतिक स्वरूप

क्षेत्रीय भौतिक स्वरूप जनसंख्या आयु संरचना के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। जिले के अन्तर्गत भूगर्भिक संरचना के अनुरूप आयुवार जनसंख्या दर्ज की गई है। जिले में उपस्थित शैल समूह आद्य महाकल्प से अभिनव महाकल्प की भूगर्भिक संरचना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रदर्शित करती है। यहाँ कुड़प्पा कालीन विजावर बालू ठोसशैल एवं चूनेपत्थर की चट्टानंे अरावली एवं विन्ध्यनकाल की हैं, जो जिले के दक्षिणी पश्चिमी भाग में विखरी विखण्डित एवं विच्छिन्न रूप में अध्ययन क्षेत्र के 2.68ः भू भाग पर फैली हुई हैं। अध्ययन क्षेत्र में विन्ध्यन चूनापत्थर शैलमिश्रित, कैमूर बलुआ पत्थर, निम्न एवं उपरि रींवा बलुआ पत्थर, भाण्डेर बलुआ पत्थर शैलसमूह जिले के दक्षिणी पश्चिमी एवं दक्षिणी भूभाग में पश्चिम से पूर्व विविधक्रमों में फैली हुई हैं, जो मुरैना पठार एवं शिवपुरी व ग्वालियर पठार के बढ़े हुए भाग है। यह शैल समूह जिले के कुल क्षेत्रफल के 30ः भूभाग को घेरे हुए है। अभिनव महाकल्प की जलोढ़ चट्टाने जिले के उत्तरी एवं विस्तृत पूर्वी भाग में फैली हुई हैं। ये चट्टाने जिले के 67.32ः भूभाग को घेरे हुए हैं।

मुरैना जिले में उच्चावचीय विषमता पायी जाती है। यहाँ का उच्चावच समुद्रतल से 120 से 340 मीटर के मध्य ऊँचा पाया जाता है। धरातलीय विविधता के आधार पर क्षेत्र को उच्च, समतल एवं खड्डीय भूभाग के रूप में विभक्त किया गया है। ये धरातलीय भूभाग जिले के क्रमशः 19.2, 64.9 एवं 15.9ः भूभाग में फैले हुए हैं। जिले का अपवाह दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व उच्चावच ढाल एवं भूआकृतिक विविधताओं के अनुरूप पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ चम्बल, कुँआरी एवं आसन सामन्यतः एक ही दिशा में प्रवाहित द्रुमाकृतिक एवं क्षेत्रीय नदियाँ,सरिताएँ अरीय व समान्तर प्रतिरूप प्रतिपादित करती हैं। इस क्षेत्र को अपवाह प्रतिरूप के आधार पर चम्बल, कुँआरी एवं आसन तंत्र के रूप में विभाजित किया गया है। यहाँ का भूमिगत अपवाह इन नदियों के अनुरूप पाया जाता है।

मुरैना जिले की जलवायुविक दशाएँ देश के मध्य पश्चिमी भाग के अनुरूप महाद्वीपीय उपोष्ण कटिबन्धीय मानसूनी पायी जाती है। यहाँ की जलवायु में चक्रीयता पायी जाती है, जो मानवीय क्रियाओं के परिवर्तन को स्पष्ट करती है। अध्ययन क्षेत्र का वार्षिक औसत उच्चत्तम ताप 34.80 सं. ग्रे. न्यूनत्तम तापमान 17.10 सें.ग्रेड एवं औसत तापमान 260 सें.ग्रे. और औसत तापान्तर 17.70 सें.ग्रे.पाया जाता है। जिले की औसत वार्षिक वर्षा 764 मि.मी. एवं आर्द्रता 46ः पायी जाती है। यहाँ जुलाई माह का औसत वायु भार 999 मि.वा.एवं जनवरी माह का औसत वायुभार 1018 मि.वा. पाया जाता है, जिसका प्रभाव हवाओं की गति एवं दिशा पर पड़ता है। इसके साथ ही यहाँ चक्रवातीय प्रभाव भी देखने को मिलता है।

अध्ययन क्षेत्र की मिट्टियों में रेत की मात्रा अधिक (60ः) एवं सिल्ट,मृत्तिका व अन्यतत्व कम (40ः) पाये जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र की मिट्टियों को तीन वर्गों में रखा गया है। अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग में काली, लाल और पीले रंग की मिश्रित मिट्टी, मध्य उत्तरी भाग में चम्बल एवं कुँआरी नदियों के अधिग्रहण क्षेत्र में लाल भूरी रेतीली मिट्टी एवं जिले के दक्षिणी एवं दक्षिणी पश्चिमी पठारी भाग में लाल और भूरी वन मिट्टियाँ जिले के क्रमशः42.4, 51.4 एवं 6.1ः भू भाग पर फैली हुई हैं।

मुरैना जिले के अन्तर्गत वन उच्च पठारी एवं खड्डीय करका क्षेत्र में पाये जाते हैं। यहाँ जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्र के 10.25ः भू भाग पर वन पाये जाते हैं, इनमें 84.8ः आरक्षित एवं 15.2ः संरक्षित वन पाये जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र के दक्षिणी पश्चिमी उच्च पठारी क्षेत्र अधिक, मध्य एवं खड्डीय भाग विरल एवं मध्य व पूर्वी भाग में न्यूनत्तम एवं वनों का अभाव पाया जाता है। जिले के अन्तर्गत प्राकृतिक वनस्पति, कंटीले मिश्रित,विषमांगी एवं शुष्क पर्णपाती पायी जाती है। इसको वनस्पति के स्वरूप एवं किस्म के आधार पर पांच श्रेणियों में रखा गया है। अध्ययन क्षेत्र में छंेकुर, रेंमजा, हींस, करोंधा, बबूल एवं करील सहवनस्पति जिले के 45ः क्षेत्र, खैर बबूल एवं छेंकुर सहवनस्पति अध्ययन क्षेत्र के 32ः क्षेत्र, पलास, तेंदू एवं खैर सहवनस्पति जिले के 7.5ः क्षेत्र, धौ सहवनस्पति जिले के 6.7ः क्षेत्र एवं छोटी मोटी झाड़ियाँ व झाड़ झंखाड़ सहवनस्पति जिले के 8.8ः क्षेत्र में पायी जाती है।

अध्ययन क्षेत्र की आयु संरचना

मुरैना जिले की अधिकांश जनसंख्या गाँव में निवास करती है यहाँ की भौगौलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, परिस्थितियाँ एवं जनांकिकी कारकों में विविधता के कारण आयु संरचना भी विविधता लिये हुये है। अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या को आयु वर्ग के आधार पर 5 भागों में विभाजित किया गया है।

सारणी 1
मानव आयु संरचना जिला मुरैना (2017 आंकलित वर्ष)

विकासखण्ड	शिशु बाल	किशोर	युवा	प्रौढ़	वृद्ध
पोरसा	100890	44953	53127	38057	18390
अम्बाह	109956	50348	64528	43982	20544
मुरैना	274263	137131	141329	100050	46877
जौरा	129778	52977	69590	42005	19122
पहाड़गढ़	82124	32236	41062	25904	10553
कैलारस	91843	37921	47784	28495	13152
सबलगढ़	104231	45962	51236	34158	15572
जिला	893085	401528	468656	312651	144210

स्रोत- क्षेत्रीय सर्वेक्षण 2017

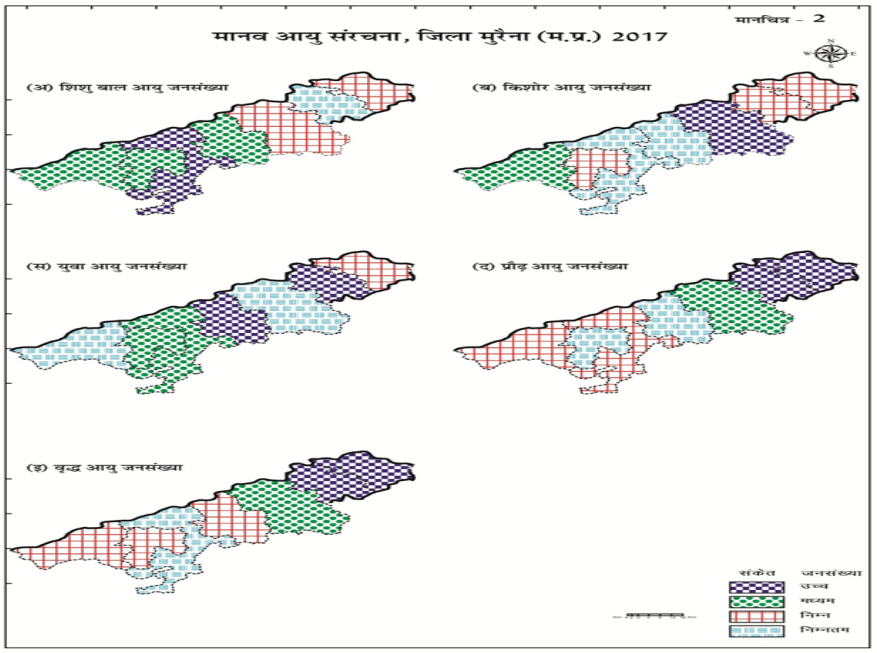

शिशु एवं बाल आयु वर्ग

इस आयु वर्ग के अन्तर्गत शिशु (0-6 आयु) एवं बाल (6-14 आयु) जनसंख्या सम्मिलित रहती है। यह आयु वर्ग सामान्यतः आश्रित वर्ग के अन्तर्गत आता है। अध्ययन क्षेत्र में शिशु एवं बाल आयु वर्ग की जनसंख्या 893085 व्यक्ति अंकित की गई है, जो कि कुल जनसंख्या का 40.2ः है। क्षेत्रीय इकाई स्तर पर इस आयु वर्ग के वितरण स्वरूप में क्षेत्रीय भिन्नता पायी जाती है (सारणी 1, मानचित्र 2)।

सारणी 1, मानचित्र 2 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में अधिक शिशु एवं बाल जनसंख्या पहाडगढ़ विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 42.8ः दर्ज की गई है। इसका प्रमुख कारण अधिक जन्मदर, घटती मृत्यु दर, शिक्षा की कमी एवं परम्पराएँ हैं। इसके विपरीत यहाँ निम्नत्तम शिशु एवं बाल जनसंख्या अम्बाह विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 38ः दर्ज की गई है। इसका प्रमुख कारण शिक्षा का विस्तार, जागरूकता एवं घटती जन्मदर है। जिले के अन्तर्गत मध्यम शिशु एवं बाल जनसंख्या जौरा, सबलगढ़ एवं कैलारस विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 41.4, 41.5 एवं 41.9ः दर्ज की गई है।

अध्ययन क्षेत्र में इस आयु वर्ग की निम्न जनसंख्या मुरैना एवं पोरसा विकासखण्डों में इनकी कुल शिशु एवं बाल जनसंख्या का क्रमशः 39.2 एवं 39.5ः निवास करती है।

किशोर आयु वर्ग संरचना

इस आयु वर्ग श्रेणी के अन्तर्गत 15 से 24 वर्ष के व्यक्ति आते हैं। इस आयु वर्ग में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक परिवर्तन होते हैं, जो जीवन की अपरिपक्वता से परिपक्वता की ओर बढ़ते हैं। इस आयु वर्ग में कुछ कर गुजरने की शक्ति तो होती है, लेकिन इन्हें एक उचित दिशा प्रदान करना आवश्यक है क्योंकि इस आयु के बाद उसे अपनी नयी जिंदगी शुरू करनी होती है। इस अवस्था से ही उसे अपने व्यावसायिक, सामाजिक एवं व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करना होता है। उचित मार्गदर्शन के अभाव में किशोर अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता है, जो पथ भ्रष्टता की ओर ले जाता है। इस कारण इस आयु वर्ग का जीवन विकास में विशेष महत्व माना जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र में इस आयु वर्ग की 401528 जनसंख्या निवास करती है, जो जिले की कुल जनसंख्या का 18.1ः है। जिले में इनके इकाईवार वितरण स्वरूप में विविधता पायी जाती है (सारणी 1, मानचित्र 2)।

सारणी 1, मानचित्र 2 से स्पष्ट है कि जिले में किशोर जनसंख्या का अधिक प्रतिशत मुरैना विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 19.6ः दर्ज किया गया है। इसके विपरीत इनका निम्नत्तम प्रतिशत पहाड़गढ एवं जौरा विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 16.8 एवं 16.9ः दर्ज किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में किशोर जनसंख्या का मध्यम प्रतिशत सबलगढ़ विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 18.3ः अंकित किया गया है। यहाँ इस आयु वर्ग का निम्न प्रतिशत कैलारस, अम्बाह एवं पोरसा विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 17.3, 17.4 एवं 17.6ः अंकित किया गया है।

युवा आयु वर्ग संरचना

इस आयु वर्ग के अन्तर्गत 25 से 39 वर्ष के युवा व्यक्ति आते हैं। क्षेत्रीय विकास में युवा जनसंख्या का विशेष स्थान माना जा सकता है। जिन क्षेत्रों में युवाओं को रोजगार के अवसर आसानी से सुलभ होते हैं, वहाँ विकास उच्च शिखर पर पाया जाता है। युवा शक्ति सम्पन्न होने के साथ नवीनता, अधिक मेहनत और अपने व्यवसाय को और अधिक सम्बृद्ध बनाने की दृष्टि से उपयोगी माने जा सकते हैं। इनमें अनुभव की कमी खलती हैं। यदि इन्हें उचित मागदर्शन मिले तो ये विकास में अधिक सहायक हो सकते हैं। अतः यह आयु वर्ग क्षेत्र की सम्बृद्धि का प्रतीक माना जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र में इस आयु वर्ग की 468656 जनसंख्या निवास करती है। जो जिले की कुल जनसंख्या का 21.1% है। यहाँ क्षेत्रीय स्तर पर इसके वितरण स्वरूप में भिन्नता दिखाई देती है (सारणी 1, मानचित्र 2)।

अध्ययन क्षेत्र में अधिक युवा जनसंख्या जौरा एवं अम्बाह विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 22.2 एवं 22.3% अंकित की गई है, इसके विपरीत इनकी निम्नत्तम जनसंख्या मुरैना एवं सबलगढ़ विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 20.2 एवं 20.4% अंकित की गई है। जिले में इनकी मध्यम जनसंख्या पहाड़गढ़ एवं कैलारस विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 21.4 एवं 21.8% अंकित की गई है। अध्ययन क्षेत्र में युवाओं की निम्न संख्या पोरसा विकासखण्ड में 20.8ः पायी गयी है, जो क्षेत्र में रोजगार की परिस्थितियों एवं रोजगार हेतु युवाओं का पलायन है।

प्रौढ़ आयु वर्ग संरचना

प्रौढ़ जनसंख्या के अन्तर्गत 40 से 59 वर्ष के व्यक्ति आते हैं। प्रौढ़ अपनी आयु का लगभग आधे से अधिक समय व्यतीत कर चुके होते है। फलतः उनमें समझ व अनुभव का विकास हो जाता है, जिसके कारण वे अपने कार्य में दक्षता कौशल प्राप्त कर लेते है और शक्ति की अपेक्षा प्रौद्योगिकी व प्रक्रिया को विशेष महत्व देते हैं, जिसका प्रभाव उत्पादन पर दिखाई देता है। प्रौढों का अनुभव एवं क्रियाशीलता युवाओं के लिए प्रेरणादायी होती है। अध्ययन क्षेत्र में प्रौढ जनसंख्या 312651 व्यक्ति पायी गयी है, जो जिले की कुल जनसंख्या का 14.1% है। अध्ययन क्षेत्र में इकाई स्तर पर इनके वितरण स्वरूप में क्षेत्रीय भिन्नता पायी जाती है।

सारणी 1, मानचित्र 2 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में अधिक प्रौढ़ जनसंख्या पोरसा एवं अम्बाह विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 14.9 एवं 15.2% दर्ज की गई है, इसके विपरीत जिले में इनकी निम्नत्तम संख्या कैलारस एवं जौरा विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 13 एवं 13.4% दर्ज की गई है। यहाँ प्रौढ़ों की मध्यम संख्या मुरैना विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 14.3% दर्ज की गई है। अध्ययन क्षेत्र में इनकी निम्न जनसंख्या पहाड़गढ़ एवं सबलगढ़ विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 13.5 एवं 13.6% अंकित की गई है।

इस आयु वर्ग के अन्तर्गत 60 व इससे अधिक वय के व्यक्ति आते हैं। ये आयु की परिपक्वता को प्राप्त कर लेते है। अतः इनकी ढ़लती उम्र शिथिलता महसूस करती है। ये उम्र के आखिरी पायदान पर होने के कारण इनमें मानसिक व बौद्धिक विकास पूर्णता को प्राप्त करता है और अनुभव के आधार पर अन्य वर्गो की वैचारिक सहायता व समझाइस देकर उनके प्रगति मार्ग को प्रशस्त्र करता है। इस आयु वर्ग में क्षीणता व असाध्यता बढ़ने के साथ सहारे की आवश्यकता होती है। अध्ययन क्षेत्र में इस आयु वर्ग की 144210 जनसंख्या निवास करती है, जो जिले की कुल जनसंख्या का 6.5% है। अध्ययन क्षेत्र में इकाई स्तर पर इनके वितरण स्वरूप में विविधता पायी जाती है (सारणी 1, मानचित्र 2)।

सारणी 1, मानचित्र 2 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में वृद्ध आयु वर्ग की अधिक जनसंख्या अम्बाह एवं पोरसा विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 7.1 एवं 7.2%अंकित की गई है। इसके विपरीत निम्नत्तम जनसंख्या पहाड़गढ़ विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 5.5% दर्ज की गई है। जिले में वृद्ध आयु वर्ग की मध्यम जनसंख्या मुरैना विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 6.7% दर्ज की गई है। यहाँ इस आयु वर्ग की निम्न जनसंख्या कैलारस, जौरा एवं सबलगढ़ विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 6, 6.1 एवं 6.2% दर्ज की गई है।

जिले की जनसंख्या के विभिन्न आयुवर्गों का अध्ययन करने से निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती हैः-

1. अध्ययन क्षेत्र में 0-14 वर्ष के शिशु बाल आयुवर्ग की जनसंख्या अधिक है। अर्थात यहाँ जन्मदर अधिक है।
2. जिले में श्रमयोग्य व्यक्तियों की अपेक्षा आश्रितों की संख्या अधिक है।
3. जिले में जनसंख्या की जीवनावधि बहुत कम (6ण्5ः) है।

सुझाव

अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में आदर्श आयु संख्या हेतु सुझाव प्रेषित हैः-

1. शिक्षा एवं स्वास्थ्य जनसंख्या नियोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि शिक्षा के विकास से परिवार नियोजन कार्यक्रम संभव होता है। अतः यहाँ शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास अपेक्षित है।
2. अध्ययन क्षेत्र में आवागमन एवं संचार सुविधाओं का विकास हो, इस हेतु जिले की 500 से अधिक जनसंख्या वाली बस्तियों को पक्के एवं अन्य बस्तियों को कच्चे मार्गों से जोड़ा जाना आवश्यक है, इससे क्षेत्र में मेलजोल बढ़ेगा और व्यवहारिक जीवन एवं अन्य क्षेत्रों की जीवन शैली से परिचित होकर जनसंख्या आयु वर्ग की विविधता को सन्तुलित किया जा सकता है।
3. ध्ययन क्षेत्र में 60 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों को प्रशासन द्वारा वृद्धावस्था पेंशन, वृद्धा आश्रम, मुक्त चिकित्सा सुविधा की योजनाओं से अवगत कराना जिससे इनकी जीवनावधि को बढ़ाया जा सकता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या की आयु संरचना विविध आयु वर्गों में अत्यधिक असमानता लिये हुये हैं, जो इसके पिछड़े आर्थिक विकास का द्योतक है। अध्ययन क्षेत्र में शिशु एवं बाल जनसंख्या का प्रतिशत 40.2 है, जो उच्च जन्मदर की ओर संकेत करती है और 60 वर्ष से अधिक उम्र वालों की जनसंख्या बहुत कम (6.5ः) है साथ ही जिले में कार्यशील जनसंख्या की तुलना में अकार्यशील जनसंख्या अधिक है। अतः जनांकिकीय संरचना को सन्तुलित करने के लिए अध्ययन क्षेत्र में प्रभावशील नियोजन अतिआवश्यक है।

संदर्भ

1. *तोमर, सीमा 2009 जनसंख्या वृद्धि एवं लिंगानुपात जिला धौलपुर*
2. *(राजस्थान) एक भौगोलिक विश्लेषण अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर।*
3. *राठौर, सत्यवती 2020"मुरैना जिले में जनसंख्या वृद्धि एवं लिंगानुपात का भौगोलिक अध्ययन" अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस*
4. *जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर।*
5. *बघेल, एस.आर. 1984'बीहड क्षेत्रीय चम्बल संभाग, ग्रामीण अधिवास एक*
6. *भौगोलिक अध्ययन अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध जीवाजी वि.वि. ग्वालियर।*